शोध मंथन Vol. XV No.II Apr.-June 2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.877 (SJIF)

लिंग संवेदीकरण के प्रति – शिक्षा की अहम् भूमिका

प्राप्तिः 07.06.2024
स्वीकृतः 26.06.2024

डॉ० विभा
एक्सटेंशन लेक्चर्र
जी०सी० सिधरावली
ईमेलः *vibhasharma.ggn@gmail-com*

40

सारांश

हम सभी भारतवासी हैं और भारतीय संस्कृति के अनुसार स्वयं को चलाने का प्रयास करते हैं किन्तु केवल इतना ही जितनी हमारी जरूरत है इससे अधिक नहीं। भारतीय संस्कृति की माने तो "वसुधैव कुटुम्बकम्" को अपनाना ही सभी के लिए कल्याणकारी है परन्तु क्या हम इसे स्वीकार करते हैं? नहीं हमारे देश में कुछ व्यक्ति विशेष वसुधैव कुटुम्बकम् एवं नारी सशक्तिकरण की बात केवल मंच पर खड़े होकर नारे लगाने में ही करते हैं यदि वे इस तथ्य को अपने जीवन में रूपान्तरित करते तो इस समय अयोध्या में राम मन्दिर, केरल में स्त्रीयों द्वारा मन्दिर दर्शन निर्भया कांड पर अश्लील टिप्पणियाँ आदि घटनाओं को प्रोत्साहन नहीं मिलता इनका घटित होना कहीं न कहीं शिक्षा के अभाव को दर्शाता है क्योंकि हमारे समाज में शिक्षा मात्र औपचारिकता बनकर रह गयी है। हमारे समाज में स्त्री को उच्च दर्जा दिए जाने की बात तो की जाती है, परन्तु जब वह अपनी इच्छाओं को प्राप्त करना चाहती है, जब वह अपने अधिकारों की बात करती है तो हमारा समाज पुरूष प्रधान समाज है यह कहकर उसे चुप करा दिया जाता है, जब वह अपने विरूद्ध हो रही बुराइयों के खिलाफ लड़ना चाहती है तो उसे उसकी स्त्रीत्वता का ज्ञान कराया जाता है आखिर क्यों? इसका एकमात्र कारण है हमारी संकुचित मानसिकता। शोधपत्र में विस्तृत रूप से स्पष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है कि कैसे हम शिक्षा के द्वारा लिंग भेद जैसी समस्या को समाप्त कर सकते हैं।

मुख्य बिन्दू

भ्रूणहत्या, नारी अस्तित्व, संगति का प्रभाव, कुसंगति, सत्संगति, संकुचित मानसिकता, सामाजिक व्यवहार।

परिचय

हमारे जीवन में लिंग भेदभाव एक विचित्र सी समस्या है। जिसको हम स्वयं भी नहीं ज्ञात कर पाते हैं कि ऐसा क्यों हो रहा है मेरे शोधपत्र का विषय है लिंग संवेदीकरण के प्रति शिक्षा की अहम् भूमिका। लिंग संवेदीकरण से हमारा अभिप्राय है लिंग के प्रति जागरूकता जिससे हम सजग रहें सचेत रहें तथा हम सभी के प्रति एक समान व्यवहार करते हुए उत्कृष्ट व्यवहारिकता का परिचय

दें लिंग संवेदीकरण व्यक्तियों को उनके व्यक्तिगत दृष्टिकोण एवं विश्वासों की जाँच करने में मदद करता है सर्वप्रथम हम संवेदीकरण शब्द को स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं।

सम् विद् घञ सम् उप सर्ग पूर्वक विद् धातु से घञ प्रत्यय करने पर संवेद शब्द सिद्ध होता है जो जानकारी भावना चेतना आदि अर्थों में व्याप्त है। वेद शब्द विद् धातु से निष्पन्न होता है विद् धातु विविध अर्थों में प्रयुक्त होती है जिनमें ज्ञान सर्वोपरी है तदुरान्त विचार सत्ता और लाभ आदि अर्थों में भी इसका प्रयोग होता है अत लिंग के प्रति व्यक्ति का ज्ञान वह ज्ञान है जो उसे उसके प्रति जागरूक करता है। स्त्री एवं पुरूष के बीच का जो भेदभाव है वह जागरूकता अर्थात् ज्ञान एवं शिक्षा से ही समाप्त किया जा सकता है

कार्य प्रणाली

लिंग भेदभाव एक समस्या है यह तो हम सभी जानते है परन्तु इस विषय पर विचार व्यक्त करते हुए मेरे मन में शंका उत्पन्न हुई कि इसका जिम्मेदार कौन है आखिर कौन है वह दोशी व्यक्तित्व जो इस भार का वहन करने में सक्षम है। तो मैंने अपने ही जीवन से सम्बन्धी विभिन्न तथ्यों का अवलोकन किया जिसके बाद ज्ञात हुआ कि हम स्वयं ही इसके दाता हैं आप सभी सोचेंगे कि हम? हम कैसे? मैं बताती हूँ हम सभी अपने बच्चों को स्कूल तो भेजते ही है वहाँ हम देखते हैं कि सभी विद्यालयों एवं महाविद्यालयों का अपना प्रतीक चिह्न होता है जिस पर संस्कृत की सूक्ति लिखी होती है जैसे– विद्ययामृतमश्नुते, वसुधैव कुटुम्बकम्, असतो मा सद् गमय, सत्यं शिवम् सुन्दरम् इत्यादि लेकिन क्या कभी कोई प्राचार्य या अध्यापक अपने विद्यालय के प्रतीक चिह्न पर अंकित इन सूक्तियों का अर्थ समझाते हैं, तो मैंने अपने ही महाविद्यालय के अध्यापकों एवं विद्यार्थियों से यह प्रश्न किया कि क्या आपको इन पंक्तियों का महत्व आपके गुरूजनों ने बताया तो आपको यह जानकर हैरानी होगी कि उन सभी का जवाब था नहीं।

विद्ययामृतमश्नुते का अर्थ है कृविद्या से अमृतत्व प्राप्त होता है, अर्थात् वह ज्ञान जो असीम है जिसका कोई मोलभाव नहीं यह वह अमष्त है जिसका पान कर लेने वाला चहुँ ओर प्रकाश ही फैलाता है।

वसुधैव कुटुम्बकम् का अर्थ है कि यह सम्पूर्ण पृथ्वी और इस पर रहने वाला प्रत्येक प्राणी हमारा कुटुम्ब अर्थात् परिवार है चाहे वह स्त्री हो या पुरूष हिन्दू हो या मुस्लिम सिक्ख हो या ईसाई हम सभी एक समान हैं ।

असतो मा सद् गमय ।।
तमसो मा ज्योतिगमय ।।
मृत्योरमामृतम् गमय।।

अर्थात् हे प्रभु असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो और मृत्यु से अमरता की तरफ ले चलो अतः हमें केवल सही दिशा निर्देश देते रहो जिससे हम कदापि जीवन में डगमगायें नहीं अगर हम इन पंक्तियों का आदान प्रदान करते तो आज हमारे समाज की ऐसी दुर्दशा न होती जिससे हमारी छोटी छोटी बच्चियों को हैवानियत का शिकार बनना पड़ता इसके

अतिरिक्त हमारे देश के नाबालिग बच्चे अपहरण एवं मृत्यु जैसे संगीन अपराधों में शामिल न होते। संस्कृत की एक प्रसिद्ध उक्ति है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला क्रियाः ।।

अर्थात् जहाँ नारी की पूजा की जाती है वहाँ देवताओं का वास होता है, जहाँ उनकी पूजा नहीं की जाती या उनको सम्मान नहीं दिया जाता वहाँ सारे कार्य विफल एवं फलरहित हो जाते हैं परन्तु आज तो स्थिति ठीक इसके विपरीत होती जा रही है हमारे शास्त्र एवं हमारी संस्कृति जहाँ नारी को सर्वोच्च स्थान देते हैं वहीं हम नारी द्वारा भगवान के दर्शन कर लेने पर भी रेड अलर्ट तक जारी करवा देते हैं। स्त्रीलिंग के प्रति ऐसी अवधारणा ऐसी संकुचित मानसिकता वो भी ऐसे प्रदेश में जहाँ की साक्षरता दर सबसे अधिक है परन्तु इसका कारण स्त्रियों की कम साक्षरता दर को देखते हुए जाना जा सकता है कि वहाँ के निवासी पढ़े लिखे तो हैं परन्तु ज्ञानी नहीं है व्यवहारिक नहीं है अगर ज्ञानी होते तो स्त्रियों के प्रति दुरागामी न होते। छान्दोग्य उपनिषद् में कहा गया है कि स्त्री का किसी भी प्रकार अपमान न करें।[2]

भारत में वर्ष २००४ में pre conception and pre Natal Diagnostic Techniques act लागू कर भ्रूणहत्या को अपराध माना गया है। हम कहते हैं बेटा पैदा करो अरे वह बेटा आयेगा कहाँ से जब एक दिन नारी का अस्तित्व ही नहीं होगा।

"स्त्रिया विरहिता सृष्टिर्जन्तूनां नोपपद्यते"

उद्देश्यः– संगति – मेरे मत में लिंग भेदभाव एवं लिंग जागरूकता के प्रति सत्संगति का बहुत बड़ा योगदान हो सकता है – सम् गम्. क्तिन् अर्थात् सम् उपसर्गपूर्वक गम् धातु से क्तिन प्रत्यय होने पर संगति शब्द की पुष्टि होती है जिसका तात्पर्य है पारस्परिक मेलजोल यह संगति दो प्रकार की हो सकती है

१. कुसंगति
२. सत्संगति

कुसंगति – इस संगति में रहने वाला व्यक्ति सदैव दूसरों को कष्ट देने वाला एवं दुराचरण करने वाला होता है इसका सबसे बड़ा उदाहरण हमारे समक्ष है निर्भया कांड जिसमें एक नाबालिग बच्चा भी इस दुष्कर्म में शामिल था। यह उसकी स्वयं की उपज नहीं थी अपितु उसकी कुसंगति का ही परिणाम था। यहाँ यह उक्ति चरितार्थ होती है कि "अंधे को अंधा मिले छूटै कौन उपाय" कुसंगति का ही परिणाम था कि कैकेयी ने मन्थरा के बहकावे में आकर राम को वनवास भेज दिया।

सन्तप्तायसी संस्थितस्य पयसः नामापि न श्रूयते
मुक्ताकारतया तदेव नलिनीपत्रस्थितं राजते ।
स्वात्यां सागरशुक्तिं संपुट्गतं तन्मौक्तिकं जायते
प्रायेणाधममध्यमोत्तम गुणाः संसर्गतो देहिनाम् ।।

अर्थात् तप्त लोहे पर पानी का नाम निशान नहीं रहता, वही पानी कमल के पुष्प पर हो तो मोती जैसा लगता है और स्वाति नक्षत्र मे सीप के अन्दर गिरे तो वह मोती बनता है अतः अधम मध्यम और उत्तम दशा संसर्ग से ही होती है तभी तो कहा गया है

कविः करोति काव्यानि रसं जानाति पण्डितः ।
तरूः सृजति पुष्पाणि मरूद्वहति सौरभम् ।।

सत्संगति – सत्संगति से अभिप्राय है सज्जनों की संगति जिसमें व्यक्ति एक दूसरे के सम्पर्क में आकर केवल ज्ञान बटोरते है जिसके फलस्वरूप मूर्ख अथवा दुराचारी भी महान बन जाते है ठीक उसी प्रकार जैसे डाकू अंगुलीमल महात्मा बुद्ध की संगति के ही कारण बहुत बड़े संन्यासी होकर अहिंसक नाम से समाज में प्रसिद्ध हुए। महाकवि कालिदास एवं तुलसीदास अपनी विदुषि पत्नियों की संगति के कारण ही इतने बड़े विद्वान बने –

हाडं माँस का देह मम तापर जितनी प्रीति ।
तिसु आधो जो राम प्रति अवसि मिटिहि भवभीति ।।

अतः स्त्रियों के प्रति हो रहे दुर्व्यवहार के लिए संगति भी एक बड़ा कारण है कई बार हम देखते हैं कि स्त्रियाँ घरेलू हिंसा की शिकार होती हैं उसका कारण भी संगति ही होती है अगर उस धर के अन्य सदस्य हिंसा करने वाले का विरोध करें तो उनका ह्रदय परिवर्तन भी वैसा हो सकता है जैसे अंगुलीमल का हुआ।

जाड्यं धियो हरति सिन्चति वाचि सत्यं
मानोन्नति दिशति पापमपाकरोति ।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं
सत्संगति कथय किन्न करोति पुंसाम् ।।

शिक्षा – शिक्षा यह शब्द शिक्ष् शिक्षणे धातु से टाप् प्रत्यय करने पर सिद्ध होता है जिसका अर्थ होता है अध्यापन, शिक्षण, प्रशिक्षण एवं विनम्रता अर्थात् विनम्रतापूर्वक ज्ञान प्राप्त करना एवं प्रदान करना परन्तु क्या आज विद्यार्थियों को वह उत्तम शिक्षा दी जाती है जिसके वह हकदार हैं वर्तमान में शिक्षा या शिक्षित करने का तात्पर्य केवल पाठ्यक्रमों तक ही सीमित रह गया है।

आज हमारा समाज शिक्षित तो है परन्तु जागरूक नहीं है। संकुचित मानसिकता एवं कुटिलता ने समाज रूपी नींव को हिला कर रखा है जिसका कारण है मात्र औपचारिकता। शिक्षा की औपचारिकता, शिक्षा के नाम पर हम बच्चों को सिखाते कुछ नहीं अपितु पढ़ाते हैं रटवाते हैं, हम उन्हें जीवन की वास्तविकता से अवगत नहीं कराते बल्कि उनका पाठ्यक्रम समाप्त कराते हैं उन्हें नैतिकता का ज्ञान देने की अपेक्षा हमने उन्हें पाश्चात्य परिवेश में जकड़ दिया है जिसका कुपरिणाम हमारे समक्ष है कि आज का युवा वर्ग स्वयं की माँ बहन एवं बुआ के अतिरिक्त स्त्रियों को अन्यथा ही लेता है। उनके प्रति सम्मानजनक व्यवहार की क्षमता उनके चित्त में है ही नहीं। यदि हम उन्हें सही शिक्षा प्रदान करें तो मेरा मानना है कि अवश्य ही स्त्रियों के प्रति हो रहे भेदभाव एवं अपमान का एक दिन अन्त होगा। भारतीय संस्कृति की माने तो उपनिषद् काल में व्यक्ति विदुशी बनने की योग्यता रखने

वाली कन्याओं को पुत्री रूप में प्राप्त करने के लिए विशिष्ट योजनाएँ सम्पादित करते थे।[3] वैदिक काल में भी स्त्रियों को पुरूष के बराबर शिक्षा प्राप्त करने एवं प्रदान करने का अधिकार था।[4] यहाँ तक की राजकुल में कार्य करने वाली स्त्रियों के लिए भी राजाओं द्वारा आचार्यों की नियुक्ति की जाती थी।[5] जो उन्हें विविध ज्ञान प्रदान करते थे परन्तु आज जब कोई परिवार अपनी बेटी को पढ़ाना चाहता है तो ईर्श्या करने एवं उनके सपनों को कुचलने वालों की लम्बी कढतार के सहज ही दर्शन हो जाते है इसके प्रत्यक्षीकरण के लिए भी हमें दूर जाने की आवश्यकता नहीं है अपने ही हरियाणा की अव्वल बेटी को इसका शिकार होना पड़ा इसका कारण था मात्र सही शिक्षा एवं नैतिक मूल्यों का अभाव। यदि उन्हें सही शिक्षा एवं नैतिकता का ज्ञान दिया जाता तो हमारी बेटी एवं उसके परिवार को इस दरिंदगी का शिकार न होना पड़ता। क्या अब उस परिवार एवं उस गाँव के लोग अपनी बेटियों को पढ़ाने की एवं उन्हें आगे बढ़ाने की सोच पाएँगे जहाँ उनके उड़ते हुए पंखों को कुचल कर फेंक दिया जाता है सम्भवतः नहीं परन्तु मेरा अपना मत है कि उन्हें इस घटना से भयभीत न होकर भारतीय संस्कृति से प्रेरणा लेते हुए अपने बच्चों को सही ज्ञान प्रदान करने का प्रयत्न करना चाहिए जिससे यह घटना दोबारा घटित न हो। स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जिससे चरित्र का निर्माण हो, मन की शक्ति बढ़े बुद्धि का विकास हो और मनुष्य अपने पैर पर खड़ा हो सके।

वैदिक काल में माँ का अपमान करने वाले को मातृहा एवं बहन का अपमान करने वाले को स्वसृहा कहा गया है[6] इसके अतिरिक्त उपनिषद् कहतें है कि जिस समय इच्छित कढ र्म में स्वप्न में भी स्त्री के दर्शन हो जाएँ तो उस कार्य में समृद्धि समझो – "यदा कर्मसु काम्येशु स्त्रीयं स्वप्नेशु पश्यति समृद्धिं तत्र जानीयात्तस्मिन्स्वपन्निदरशने"[7] तो फिर किसने हमें स्त्रियों की अवमानना करने का अधिकार दिया।

अब भारत के राज्यों मे स्त्री एवं पुरूष की साक्षरता दर को एक सूची के माध्यम से स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है जो हमारी संकुचित मानसिकता की परिचायक है।

राज्य	**स्त्री**	**पुरूष**
मिजोरम	89.27	93.35
केरल	92.01	96.01
गोवा	84.66	92.65
हिमाचल प्रदेश	76.60	90.83
त्रिपुरा	82.79	92.60
महाराश्ट्र	75.87	88.38
सिक्किम	75.61	86.55
मणिपुर	70.26	83.58
असम	66.27	77.85
उत्तराखण्ड	70.70	88.33
तमिलनाडु	73.45	80.09

पंजाब	70.73	80.44
नागालैंड	76.11	82.75
गुजरात	69.68	85.75
मेघालय	65.46	80.00
उड़ीसा	50.97	75.95
जम्मू कश्मीर	56.65	83.09
आँध्र प्रदेश	50.04	70.03
छत्तीसगढ़	60.59	81.49
अरुणाचल प्रदेश	59.57	73.69
उत्तर प्रदेश	57.18	77.28
मध्य प्रदेश	60.00	80.05
झारखंड	55.42	76.84
राजस्थान	52.12	79.19
बिहार	51.50	71.20
हरियाणा	65.94	84.06

प्रासंगिकता

इन सभी आँकड़ो का अध्ययन करने एवं सामाजिक अवलोकन करने पर लिंग संवेदीकरण के प्रति मैं इसी निष्कर्ष पर पहुँची हूँ कि इसके लिए किसी धर्म किसी कानून किसी मजहब एवं बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जैसी योजनाओं की कोई आवश्यकता नहीं होगी यदि हम स्वयं जागरूक अर्थात् ज्ञानी हो जाएँ। लिंग भेदभाव की समस्या कोई समस्या नहीं रह जायेगी अपितु वसुधैव कुटुम्बकम् रूपी दृश्य जो मात्र एक स्वप्न है वह यथार्थ में परिवर्तित हो जायेगा और तब न कोई बेटी रोयेगी न कोई माँ आँसू बहायेगी न कोई पिता बेटी जन्म पर स्वयं को लानत देगा।

मैकाले की शिक्षा पद्धति का उद्देश्य मनी मेकिंग पैसा बनाने की शिक्षा देना था और स्वामी विवेकानन्द की शिक्षा का उद्देश्य मैन मेकिंग अर्थात् व्यक्ति निर्माण था। आप स्वयं समझदार है कि हमें किस नीति पर चलना चाहिए।

सन्दर्भ

1. वामन शिव०आ०को०.
2. छान्दोग्य उपनिषद् २.१३.२.
3. व्रहदारण्यक उपनिषद ६.४.१७.
4. भारत की संस्कृति साधना पृष्ठ ५६.
5. भारत की संस्कृति साधना पृष्ठ ६०.
6. छान्दोग्य उपनिषद् ७.१५.२–३.
7. छान्दोग्य उपनि.ाद् ५.२.६.